मैं खुश हूँ,

पर इन आँखो मे नमी क्यो हैं ,

खुशियो की बयार तो है,

फिर ये अनचाही कमी क्यो हैं ॥

मैं खुश हूँ,

पर ये ज़ुबाँ क्यो लड़खड़ा रही हैं,

शब्दो को तो सिर्फ़ गढ़ना हैं,

एक नये प्रारूप मे मढ़ना हैं,

फिर शब्दो से पीछा क्यो छुड़ा रही हैं ॥

मैं खुश हूँ,

पर ये कैसा अंजाना डर हैं,

हाथ थामने के लिये मेरा,

सैकड़ो हाथ हैं खड़े,

फिर भी क्यो लगता अंजाना शहर है ॥

मैं खुश हूँ,

फिर दिल मे उलझनो का होना क्या सही हैं,

एहसासो के मायने तो वही हैं,

पर उन एहसासो मे मेरी सोच छटपटा रही हैं ॥

मैं खुश हूँ,

पर मेरी आवाज़ की खनक कही खो गयी हैं,

साज़ तो अभी भी हैं जिंदगी मे,

फिर उसकी आत्मा कहाँ गुम हो गयी हैं ॥

मैं खुश हूँ,

पर खुद के लिए अभी भी तन्हा हूँ,

भीड़ तो लगी हैं अपनो की,

पर उनके बीच मैं कहाँ हूँ ॥

मैं खुश हूँ,

फिर मेरी रफ़्तार मे ये रुकावट कैसी हैं,

मैं पग पग पर वक़्त का साथ देती हूँ,

फिर जिंदगी की इतनी बेकार लिखावट क्यो हैं ॥

Deepchandra Srivastava